डॉ. शिव कुमार प्रसाद: व्यक्तित्व, कृतित्व आ साहित्यिक अवदानक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. खुशबू कुमारी सिंह

अतिथि प्राध्यापक

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा (बिहार)

व्यक्तित्व:

डॉ. शिव कुमार प्रसादक व्यक्तित्वक निर्माण मिथिलाक ग्रामीण जीवन-भूमि, कृषक संस्कार आ दीर्घ शिक्षण-सेवा केर तीनू धाराक संगमसँ भेल अछि। सिमरा, झंझारपुरक माटि, खेत-खलिहान, ऋतु-चक्र आ लोकाचार जतेक हुनक जीवनक आधार रहल, ओतबे हुनक भीतर गम्भीर अनुशासन, श्रमक गरिमा आ समाजक सूक्ष्म समझ विकसित भेल। पिता स्व. निर्धन प्रसाद आ माता स्व. यमुना देवीक छाँहिमे कृषि-परिवारसँ जे नैतिक पाठ हुनका प्राप्त भेल, से बादक जीवनमे "काजक मर्यादा" आ "सामाजिक उत्तरदायित्व"क रूपमे सुदृढ़ रूपेँ स्थापित भ' गेल। ई व्यक्तित्व ओहि वर्गक प्रतिनिधि रूपेँ देखाइत अछि जे अपन जड़िसँ कटि क' बौद्धिकता नहि गढ़ैत, बल्कि जड़ि संगहि बौद्धिकताकेँ ठोस आधार प्रदान करैत अछि।

हुनकर शिक्षा-यात्रा मात्र डिग्री-प्राप्तिक क्रम नहि, बल्कि स्पष्ट बौद्धिक अनुशासनक विकास-क्रम अछि। पटना विश्वविद्यालयसँ स्नातक, स्नातकोत्तर आ बी.एड. करैत ओ शिक्षाशास्त्रक व्यवहारिक पक्ष बुझलैन। तत्पश्चात् मिथिला विश्वविद्यालयसँ पी.एच.डी. करैत शोध-पद्धति, स्रोत-सन्धान, संदर्भ-शुद्धता आ तर्क-संगति आदि गुण अपन लेखन-व्यवहारमे आत्मसात् क' लेलैन। एहि कारण हुनकर व्यक्तित्वमे भावुकता आ तर्क दूनू संग-संग चलैत अछि। ओ उत्साहमे नहि, प्रमाणक आधारपर बोलैत छथि। दावा करबाक पूर्व आधार खोजैत छथि आ निष्कर्ष देबाक पूर्व प्रसंग, पृष्ठभूमि तथा सामाजिक संदर्भ स्पष्ट करैत छथि। ई शोध-प्रवृत्ति हुनका सामान्य अध्यापकसँ अलग पहचान प्रदान करैत अछि।

शिक्षणक क्षेत्रमे हुनकर तीन दशकसँ अधिकक निरन्तरता हुनकर व्यक्तित्वक मुख्य पहचान अछि। 1984सँ 1996 धरि पा.ल. महिला महाविद्यालय, झंझारपुरमे हिन्दी विभागक व्याख्याता रहलाह। तत्पश्चात् नवम्बर 1996सँ 2005 धरि हरिहर साहा महाविद्यालय, उदाकिशुनगंज, मधेपुरामे व्याख्याता पदपर कार्यरत रहलाह। 2006सँ नवम्बर 2021 धरि निर्मली महाविद्यालय, आब हरि प्रसाद साह महाविद्यालय, निर्मलीमे हिन्दी विभागाध्यक्षक रूपमे सेवा देलाह। ई क्रम केवल नौकरीक विवरण नहि, बल्कि स्थिर, दीर्घकालिक आ संस्थागत जिम्मेदारीसँ युक्त जीवन-दृष्टिक प्रमाण अछि। विभागाध्यक्षक रूपमे हुनकर भूमिका मात्र पाठ्यक्रम संचालन धरि सीमित नहि रहल। ओ विभागीय संस्कृतिमे अनुशासन, अध्ययनक गंभीरता आ छात्र-मार्गदर्शनक सुदृढ़ परम्परा विकसित करबाक दिशामे निरन्तर अग्रसर रहलाह।

सेवा-निवृत्तिक बादो ओ शोध-निर्देशनमे सक्रिय छथि। भूपेन्द्र नारायण मण्डल विश्वविद्यालयमे शोधनिदेशकक रूपमे आ मिथिला विश्वविद्यालयक किछु शोधकर्ताक निजी निदेशकक रूपमे हुनकर संलग्नता जारी अछि। ई तथ्य हुनकर व्यक्तित्वमे निहित ज्ञानक सततताकेँ स्पष्ट करैत अछि। हुनकर लेल सेवानिवृत्ति विराम नहि, बल्कि जिम्मेदारीक स्वर बदलि क' निरन्तरता बनल रहबाक प्रतीक अछि।

हुनकर हिन्दी शोध-आलेखक विषय-विस्तार देखलापर अकादमिक पक्ष ठोस रूपमे उभरि क' अबैत अछि। हिन्दी साहित्येतिहासमे उर्दू साहित्यक स्थान, कबीरक जीवन-दर्शन, नागार्जुनक हिन्दी आ मैथिली उपन्यास तथा काव्य-संसार, हिन्दी भाषा विषयक उपलब्धि, चुनौती आ समस्या, समकालीन कथा-लेखनमे लेखिकाक कथा-संसार आ स्त्री-विमर्श, प्रेमचन्दक उपन्यासमे कृषक-जीवनक यथार्थ, आ अनूप लाल मण्डलपर केन्द्रित आलेख आदिकेँ देखलासँ हुनकर

विचारक-स्वभाव स्पष्ट होइत अछि। एक दिस परम्परा अछि, जे कबीर आ प्रेमचन्दमे देखाइत अछि। दोसर दिस आधुनिकता अछि, जे नागार्जुन आ समकालीन स्त्री-विमर्शमे प्रकट होइत अछि। तेसर दिस भाषा आ समाजक व्यावहारिक धरातल अछि। ई त्रिकोण हुनकर व्यक्तित्वमे संतुलित बौद्धिकता निर्मित करैत अछि। ओ केवल पाठक नहि, बल्कि समाजक पाठ पढ़निहार सजग आलोचक छथि।

पुस्तक-लेखन आ समीक्षा-लेखन हुनकर व्यक्तित्वक दोसर महत्त्वपूर्ण आयाम अछि। "भाव-अनुभाव" काव्य-संग्रह हुनकर संवेदनशील मनक प्रमाण दैत अछि, किन्तु ई संवेदना आत्मकेंद्रित नहि, बल्कि समाज, अनुभव आ समयक दबावसँ पोषित संवेदना अछि। "क्षितिज" शोध-आलेख-संकलन आ प्रेमचन्द-केन्द्रित ग्रन्थ हुनका शोधकर्ता-आलोचकक रूपमे स्थापित करैत अछि। अनूप लाल मण्डलपर लिखल कृतिसँ हुनकर समकालीन साहित्यक प्रति सक्रिय सरोकार स्पष्ट होइत अछि। समीक्षा-लेखनमे "मन्दिर आ मस्जिद के बहाने" आ "एक खोयी हुई नारी" जेकाँ शीर्षक संकेत दैत अछि जे ओ सामाजिक रूपेँ संवेदनशील विषय सभपर विवेकपूर्ण दृष्टि रखैत छथि। "अनूपलाल मण्डल के उपन्यासों में नारी विमर्श" जेकाँ आलेख हुनकर स्त्री-विमर्शक प्रति अध्ययनशील रुचि आ अकादमिक मंचपर प्रस्तुतीकरणक क्षमता, दूनूकेँ एक संग उद्घाटित करैत अछि।

संपादन-कार्य, विशेषतः महाविद्यालयक स्वर्ण-जयंती समारोहपर प्रकाशित स्मारिका "स्वर्णिका"क संपादन, हुनकर संस्थागत चेतनाकेँ स्पष्ट करैत अछि। संपादन केवल भाषा-सुधार नहि होइत, बल्कि संस्थाक स्मृति, उपलब्धि आ सांस्कृतिक पूँजीकेँ सुव्यवस्थित करबाक दायित्व सेहो होइत अछि। एतऽ डॉ. शिव कुमार प्रसादक व्यक्तित्वमे विद्यमान दस्तावेजीकरणक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होइत अछि, जे हुनकर शोधपरकता संग प्रत्यक्ष रूपेँ संबद्ध अछि।

मैथिली भाषा आन्दोलनमे हुनकर सहभागिता हुनकर व्यक्तित्वक सर्वाधिक जीवंत, संघर्षशील आ ऐतिहासिक पक्ष अछि। पटना विश्वविद्यालयक छात्र-जीवन, 1976सँ 1984 धरि, "निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ"सँ जुड़ि क' ओ भाषा-अधिकारक संघर्षमे सक्रिय रहलाह। संगठनक कार्यालय-व्यवस्था, पर्चा-पम्पलेट वितरण, पोस्टर-निर्माण, नारा-लेखन, चन्दा-संग्रह, कार्यकर्ता-संवाद आ जुलूस-आयोजन जेकाँ कार्यसभमे हुनकर प्रत्यक्ष सहभागिता रहलनि। गाँधी मैदानसँ आर ब्लॉक चौराहा धरि निकलल मैथिली जुलूस आ ओहि क्रममे लाठी-प्रहार सहबाक अनुभव स्पष्ट करैत अछि जे हुनकर भाषा-प्रेम केवल भावनात्मक नहि, बल्कि जोखिम उठाबय वालीक प्रतिबद्धता छल। आन्दोलनक भीतरे ओ आन्तरिक विरोधाभासो देखलैन। दरभंगाक घटनाक उल्लेखसँ स्पष्ट होइत अछि जे राजनीतिक आग्रह आ भाषिक आग्रह एक संग चलबामे कतेक जटिलता उत्पन्न होइत अछि। एहन अनुभव व्यक्तिकेँ कटु बना सकैत छल, किन्तु हुनका भीतर एहि अनुभवसँ विवेक, यथार्थ-बोध आ धैर्यक विकास भेल। ओ अपन बात सधे शब्दमे रखैत छथि, जे गुण एक शोधकर्ता लेल अनिवार्य मानल जाइत अछि।

नोकरीक कारण आन्दोलनसँ दूरी अवश्य भेल, किन्तु भाषा-संस्कारसँ दूरी कदापि नहि भेल। महिला महाविद्यालय, झंझारपुरमे रहैत ओ सांस्कृतिक कार्यक्रमसभक माध्यमसँ मैथिली-जागरणक कार्य करैत रहलाह। अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ स्थान भेटलाक उपरान्त प्राथमिक विद्यालयमे मैथिली-माध्यम लागू करबाक चर्चापर हुनकर दृष्टि स्पष्टतः व्यावहारिक अछि। ओ सहयोग करबाक इच्छा प्रकट करैत छथि, किन्तु आयुक कारण दौड़-धूप कठिन होयबाक यथार्थ सेहो स्वीकार करैत छथि। ई स्वीकारोक्ति हुनकर व्यक्तित्वक ईमानदारी आ यथार्थनिष्ठा दर्शबैत अछि। ओ बनावटी घोषणासँ दूर रहैत छथि।

लेखक कहैत छथि- "निर्मलीमे 2006क आसपास उमेश मण्डलसँ भेँट आ तदनन्तर मैथिली लेखनमे सक्रियता, संगहि "सगर राति दीप जरय" कथा-गोष्ठीसँ जुड़ाव भेल।"[i] ई वकतव्य हुनकर व्यक्तित्वक सामुदायिक आयाम उजागर करैत अछि। 16 जून 2018केँ सिमरा, झंझारपुरमे "सगर राति दीप जरय"क आयोजक आ संयोजकक रूपमे भूमिका निभायब आ स्थानीय स्तरपर साहित्यिक मंच तैयार करब एहि बातक संकेत दैत अछि जे ओ साहित्यकेँ केवल व्यक्तिगत साधना नहि मानैत छथि, बल्कि सामूहिक चेतना जागृत करबाक प्रभावी माध्यम मानैत छथि। एकटा शिक्षक, एकटा आयोजक आ एकटा आलोचक रूपेँ कर्मशील सांस्कृतिक कार्यकर्ता, ई बहुआयामी उपस्थिति हुनकर व्यक्तित्वक मूल शक्ति अछि।

मैथिलीमे हुनकर रचनात्मक उपस्थिति अनेक मंचपर देखाइत अछि। “विदेह”मे कविता, “देसिल बयना” स्मारिका, हैदराबादक विभिन्न अंकमे कविता आ अनुवाद, लालदास स्मारिकामे आलेख, “वाची”मे मातृभाषा संकटपर विचार-लेख, कथा-संग्रह आ काव्य-संग्रहपर पोथी-समीक्षा, आ “विदेह बीहनि कथा विशेषांक”मे प्रकाशित बिहनि कथा। ई सूची मात्र प्रकाशनक गणना नहि, बल्कि भाषा आ संस्कृतिक प्रति सतत सक्रियताक प्रमाण अछि। हुनकर समीक्षा-लेखनमे मिथिलाक साहित्यिक संसारसँ जीवंत संवाद परिलक्षित होइत अछि। ओ नव प्रकाशित पोथीसभ पढ़ैत छथि, तकर विवेचना करैत छथि आ पाठक-समुदाय धरि तकर अर्थ पहुँचबैत छथि। “सोंहाँत–अनसोंहाँत”, “पिघलैत हिमखण्ड” आ “राग–विराग” सदृश कृतिसभ हुनकर रचनाशीलताक निरन्तरताकेँ स्पष्ट करैत अछि।

एहि सभ आधारपर डॉ. शिव कुमार प्रसादक व्यक्तित्व एक समेकित रूप धारण करैत अछि। ग्रामीण कृषक संस्कारसँ उद्भूत, विश्वविद्यालयीय अध्ययनसँ परिष्कृत, शिक्षणक दीर्घ अनुभवसँ सुदृढ़, भाषा-आन्दोलनक संघर्षसँ प्रखर आ साहित्यिक मंचन तथा लेखनसँ लोक-चेतनासँ सम्बद्ध ई व्यक्तित्व बहुआयामी स्वरूप ग्रहण करैत अछि। ओ हिन्दी आ मैथिली दूनू भाषामे अपन-अपन ढंगसँ सक्रिय छथि। हिन्दीमे ओ शोध-आलोचना आ अकादमिक लेखनक परम्पराकेँ समृद्ध करैत छथि, आ मैथिलीमे सांस्कृतिक दायित्व, रचनात्मक अभिव्यक्ति आ भाषा-संरक्षणक भावभूमिमे योगदान दैत छथि।

अन्ततः हुनकर व्यक्तित्व शिक्षक, शोधकर्ता, भाषा-कर्मी आ रचनाकार, एहि चारू परिचयसँ एक संग प्रतिष्ठित देखाइत अछि। ई चारू आयाम मिलि क’ मिथिलाक समकालीन बौद्धिक इतिहासमे एक जिम्मेदार, प्रमाणनिष्ठ आ कर्मठ व्यक्तिक सुदृढ़ छवि निर्मित करैत अछि।

कृतित्व:

सोंहाँत-अनसोंहाँत- ई कविता-संग्रह मिथिला समाजक भौगोलिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक आ नैतिक अनुभवक विस्तृत काव्यात्मक दस्तावेज अछि। आरम्भिक कविता ‘मिथिला धाम’ मिथिलाक ऐतिहासिक चेतना आ सांस्कृतिक गौरवकेँ आधार प्रदान करैत अछि। तदुपरान्त ‘तँए किछु ने किछु लिखैत जाउ’ रचनात्मक उत्तरदायित्व आ कविक आत्मसंघर्षकेँ स्वर दैत अछि। ‘निर्मलीक निर्मलतामे’ स्थान-बोध आ स्मृतिक माध्यमसँ सामाजिक शुचिता आ नैतिक अपेक्षाकेँ रेखांकित करैत अछि, जबकि ‘बौआक उबटन’ लोकाचार, पारिवारिक आत्मीयता आ ग्रामीण संस्कारक सजीव चित्र प्रस्तुत करैत अछि। ‘शहर ओ गेल’ गामसँ शहरक पलायन आ ताहिसँ उपजल सांस्कृतिक विछोहकेँ उघारैत अछि, आ ‘साँझ’ दैनन्दिन जीवनक थकान आ आत्मचिन्तनक क्षणकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

‘ढोलक बोखार’ लोकसंस्कृतिक उन्मेष आ सामूहिक चेतनाकेँ व्यक्त करैत अछि, जबकि ‘खेबैया’ श्रम, जीविका आ सामाजिक भूमिकापर केन्द्रित अछि। ‘माय हमर नव-कुम्भ नहेली’ माय हमर नव-कुम्भ नहेली’ मातृत्व आ स्त्री-सम्मानक मार्मिक अभिव्यक्ति अछि-

“सिनेहक डोरि तोड़ि कऽ ममता
सुन्दरता केर मोल बिका गेल
दाइ नौरिनक संग पाबि कऽ
नेना माइक नेह भुला गेल
कजरौटी केर...।”[ii]

एहि पंक्तिमे कवि आधुनिक मूल्य-परिवर्तन आ मातृस्नेहक क्षरणक करुण यथार्थ उघारैत छथि। ‘छठि पाबैन’ लोकपर्व, आस्था आ सामुदायिक अनुशासनकेँ सजीव बनबैत अछि। मातृत्व आ स्त्री-सम्मानक मार्मिक अभिव्यक्ति अछि, आ ‘छठि पाबैन’ लोकपर्व, आस्था आ सामुदायिक अनुशासनकेँ सजीव बनबैत अछि। ‘भुमकम’ अस्थिरता आ भयक सामाजिक मनोविज्ञानपर संकेत करैत अछि, आ ‘दीप’ अन्धकारक बीच आशा आ चेतनाक प्रतीक बनैत अछि।

‘मन पछताय’ आन्तरिक द्वन्द्व आ आत्मालोचनक स्वर अछि, जबकि ‘सभ झूठ-फूसमे बाझल छी’ सामाजिक

पाखण्ड आ मिथ्या नैतिकताक तीक्ष्ण आलोचना करैत अछि। 'देख एलौं हम पटना' शहरी अनुभव, विसंगति आ दृष्टान्तक कविता अछि, आ 'नेह' मानवीय सम्बन्धक सहज ऊष्माकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि। 'किनको क्यो नहि भेल' सामूहिक असंवेदनशीलताक प्रश्न उठबैत अछि, आ 'पियास' शारीरिक संग-संग नैतिक आ भावनात्मक तृष्णाकेँ रेखांकित करैत अछि।

'अत्मा केर छोलिका' आत्मबोध आ बाह्य आवरणक द्वन्द्वपर केन्द्रित अछि, आ 'ओझराहैट' सामाजिक भ्रम आ अन्धविश्वासक संकेत दैत अछि। 'आश विहीन हास विहीन' निराशाग्रस्त मनोदशाक सशक्त चित्र प्रस्तुत करैत अछि, जबकि 'कुदीन' श्रमजीवी जीवनक प्रतीकात्मक उपस्थिति अछि। 'जनमलकेँ नहि समटल' सामाजिक अव्यवस्था आ अविकसित मानवीय चेतनाकेँ रेखांकित करैत अछि, आ 'ठनकल फेर ठनका' आवर्तित संकट आ इतिहासक पुनरावृत्तिक बोध करबैत अछि।

'विरान' एकान्त, सूनेपन आ मानसिक रिक्तताक स्वर अछि, आ 'मन नहि लगैत अछि' आन्तरिक बेचैनी आ असन्तोषकेँ व्यक्त करैत अछि। 'सुमीता' व्यक्तिगत चरित्रक माध्यमसँ सामाजिक यथार्थकेँ प्रस्तुत करैत अछि, जबकि 'अनसोंहाँत' असमानता आ असंगत सामाजिक व्यवहारक रूपक अछि। 'फगुआ' आ 'फागुन' ऋतु, रंग आ लोकानन्दक प्रतीक बनैत अछि, आ 'मनोरथ' मानवीय आकांक्षा आ स्वप्नक काव्यात्मक अभिव्यक्ति अछि।

'वेलेनटाइनक बात' आधुनिक उपभोगवादी संस्कृति आ आयातित भावनाकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। 'बसंत' आ 'बसंती भोर' नवचेतना, सृजन आ आशाक संकेत दैत अछि। 'कर्मक बाट' नैतिक परिश्रम आ जीवन-दृष्टिक मार्गनिर्देशन करैत अछि, आ 'बिसबास' मानवीय सम्बन्धक आधारभूत तत्वक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। 'थकावट' श्रमसँ उपजल शारीरिक आ मानसिक अवस्थाकेँ चित्रित करैत अछि, आ 'गुलाब' सौन्दर्य आ कोमल संवेदनाक प्रतीक बनैत अछि।

'अपन' आत्मपहचान आ निजत्वक स्वर अछि, आ 'अगहन पूष' ऋतुचक्र आ ग्रामीण जीवनक कठिन समयकेँ उभारैत अछि। 'जुआनिक बोखार' युवा मनक उथल-पुथल आ संक्रमणकालीन अवस्थापर केन्द्रित अछि, आ 'भोग' लोभ, उपभोग आ नैतिक विचलनक संकेत दैत अछि। 'जाड़' आ 'कनकनी' प्रकृतिक कठोरता आ मानवीय सहनशीलताकेँ सजीव करैत अछि।

'रिजल्ट' मूल्यांकन, सफलता आ असफलताक सामाजिक दबावपर केन्द्रित कविता अछि, आ 'जिनगीक झमेला' जीवनक जटिलताक सहज स्वीकार प्रस्तुत करैत अछि। 'गाम छूटल' विस्थापन आ स्मृतिक पीड़ाकेँ स्वर दैत अछि, आ 'छितिर-बितिर' सामाजिक बिखराव आ असंगठनक बोध करबैत अछि। 'जातिक छाऊर' जातीय संरचना आ सामाजिक भेदभावक तीक्ष्ण संकेत अछि, आ 'ईहो तँ जिनगीए छै' जीवनक कठोर यथार्थक स्वीकारक कविता अछि।

'गामक बात' ग्रामीण समाजक सामूहिक स्मृति आ अनुभवकेँ सहेजैत अछि, जबकि 'बौआइत' लोकभाषा आ ग्रामीण व्यवहारक सहज चित्र प्रस्तुत करैत अछि। 'झूठ' सामाजिक छल आ नैतिक पतनपर केन्द्रित अछि, आ 'भातक थारी' श्रम, भोजन आ जीवनक आधारभूत सच्चाईक कविता अछि। 'मधुर प्रात' आशा आ नूतन आरम्भक संकेत दैत अछि, आ 'जुग-पुरुष' समय, इतिहास आ मानवीय भूमिकापर विचार प्रस्तुत करैत अछि।

द्वितीय 'दीप' कविता संग्रहक प्रकाश-चेतनाक पुनःस्थापन करैत अछि। 'मैथिल' भाषिक अस्मिता आ सांस्कृतिक गौरवक स्वर अछि, आ 'छोटकी-बड़की' पारिवारिक संरचना आ सामाजिक सम्बन्धक सूक्ष्मतापर केन्द्रित अछि। 'घाघस' लोकबुद्धि आ ग्रामीण व्यावहारिकताक प्रतीक बनैत अछि, आ 'परम्परा' सांस्कृतिक निरन्तरता आ पीढ़ीगत हस्तान्तरणकेँ रेखांकित करैत अछि।

'राग' भावनात्मक प्रवाह आ संगीतात्मक संवेदनाक कविता अछि, आ 'विद्याक अर्थी' शिक्षा-व्यवस्थाक विडम्बना आ मूल्यह्रासक आलोचना करैत अछि। 'हर्षित फुलकित प्राण' जीवनक उत्साहपूर्ण क्षणकेँ स्वर दैत अछि, आ 'गाछ' प्रकृति, स्थायित्व आ जीवन-परम्पराक प्रतीक बनैत अछि। 'गाए आ गंगा' ग्रामीण आ सांस्कृतिक पवित्रताक संयुक्त बिम्ब प्रस्तुत करैत अछि।

'मनक बात' आन्तरिक अनुभूतिक सरल अभिव्यक्ति अछि, आ 'पुम्ही' लोकजीवनक प्रतीकात्मक उपस्थिति प्रस्तुत करैत अछि। 'खेतिहर' किसान आ श्रमक गरिमाकेँ केन्द्रीय विषय बनबैत अछि, 'खेतिहर' किसान आ श्रमक

गरिमाकेँ केन्द्रीय विषय बनबैत अछि-

‘“बरखै मेघ कि बरखै आगि

खेतिहर लेल अछि एके बात

जाड़ हाड़केँ कँपबै तैयो

खेतक आरिपर काटय राति।”[iii]

एहि पंक्तिमे कवि प्रकृतिक अनिश्चितता आ किसानक अविराम श्रम-दृढ़ताकेँ मार्मिक रूपेँ चित्रित करैत छथि। ‘मृदुल थाप’ कोमल संवेदनाक काव्यात्मक संकेत अछि आ ‘मृदुल थाप’ कोमल संवेदनाक काव्यात्मक संकेत अछि। ‘डौंस बहुत’ सामाजिक अतिरेक आ दुराचारक आलोचना करैत अछि, आ ‘अतमा बैमान छै’ नैतिक आत्मसंघर्षकेँ स्वर दैत अछि।

‘हेहरा’ लोकजीवनक सहज हास्य-व्यंग्यक बिम्ब अछि, आ ‘बाबाक गाम’ पुश्तैनी स्मृति, अपनत्व आ जड़ताक कविता अछि। ‘मनक गगन’ कल्पना, स्वप्न आ आन्तरिक विस्तारकेँ रेखांकित करैत अछि। ‘नोर’ दैनन्दिन संघर्ष आ जीवनक भारक प्रतीक बनैत अछि, जबकि ‘सुरभित आनन’ सौन्दर्य आ कोमल भावनाकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि।

‘संतोष’ आत्मतृप्ति आ संयमक मूल्य प्रस्तुत करैत अछि, आ ‘तमसो मा ज्योर्तिगमय’ अज्ञानसँ ज्ञान दिस यात्रा आ नैतिक प्रकाशक बोध करबैत अछि। ‘अवस्था’ सामाजिक, आर्थिक आ मानसिक स्थितिक समग्र चित्र प्रस्तुत करैत अछि। ‘चोरबा सभकिछु लऽ गेल’ व्यवस्था, शोषण आ हानि-बोधक प्रतीकात्मक कविता अछि, आ ‘बेगरता’ अभाव आ विवशताक मानवीय अनुभवकेँ उभारैत अछि। अन्तमे ‘साखी-1’, ‘साखी-2’ आ ‘साखी-3’ लघु काव्यात्मक कथनक माध्यमे नैतिक सत्य, अनुभव आ जीवन-दर्शनक सार प्रस्तुत करैत अछि।

समग्र रूपेँ ई कविता-संग्रह मिथिला समाजक जीवन, भाषा, श्रम, संस्कृति आ मानवीय संवेदनाक व्यापक काव्यात्मक अभिलेख अछि, जाहिमे प्रत्येक कविता अपन विषयसँ जुड़ैत हुए सामूहिक सामाजिक चेतनाक निर्माण करैत अछि।

‘राग-विराग’ डॉ. शिव कुमार प्रसादक काव्य-संग्रह अछि, जे मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना आ आध्यात्मिक विवेकक संतुलित समन्वय प्रस्तुत करैत अछि। एहि संग्रहमे राग आ विराग जीवनक दू परस्पर पूरक अवस्था जेकाँ उपस्थित अछि, जेमे अनुराग, करुणा, मोह, समर्पण आ संगहि विरक्ति, आत्मचिन्तन आ वैचारिक दूरी सम्मिलित अछि। कवि अपन अनुभव, लोकस्मृति आ समयक आलोचनात्मक बोधकेँ संयत भाषामे अभिव्यक्त करैत छथि।

संग्रहक आरम्भ धार्मिक आ सांस्कृतिक संवेदनासँ जुड़ल कवितासभसँ होइत अछि। ‘पूजा’, ‘तोड़ि ले सिनेह आइ’, ‘स्मरण’, ‘अपनहि करी उपाय’ आ ‘तगेदा’ मानवीय आस्था, आत्मबल आ सामाजिक उत्तरदायित्वक विविध पक्ष उद्घाटित करैत अछि। जीवनक जटिलतापर गंभीर चिन्तन ‘जिनगीक पहेली’, ‘विवेक’, ‘पेंच’ आ ‘सहज जिनगी’ मे देखाइत अछि। ‘हे भगवती’ आ ‘साँच’ जेकाँ रचनामे भक्ति आ नैतिक आग्रह एक संग उपस्थित अछि।

व्यक्तिगत मनोदशा आ सामाजिक व्यवहारक सूक्ष्म बोध ‘मनक हाट’, ‘मनक बात’, ‘फाँस’, ‘मनक जोड़’ आ ‘अन्तर्यामी मन’ मे प्रकट होइत अछि। स्त्री-संवेदना आ पारिवारिक सम्बन्ध ‘बेटी’, ‘माए’, ‘माँ’, ‘मटरा माय’, ‘सिनेहक आँगुर’ आ ‘दाँत बीच जीभे सन’ मे आत्मीय रूपेँ उभरैत अछि। स्त्री-संवेदना आ पारिवारिक सम्बन्ध ‘बेटी’, ‘माए’, ‘माँ’, ‘मटरा माय’, ‘सिनेहक आँगुर’ आ ‘दाँत बीच जीभे सन’ मे आत्मीय रूपेँ उभरैत अछि-

“आन्तरिक सिनेहक

भेटैत छल आशीष,

अपन केश उजारि

दादीसभ दैत छलीह

अपन औरदाक आशीष।”[iv]

एहि पंक्तिमे कवि पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्नेहक अविच्छिन्न धारा आ घरेलू संस्कारक जीवित परम्पराकेँ मार्मिक ढंगसँ चित्रित करैत छथि।

सामाजिक विषमता आ आर्थिक विडम्बना ‘बिलहैत दरमाहा’, ‘पैघ लोक’, ‘प्रपंच’ आ ‘आखिरी जन’ मे सघन रूपेँ अभिव्यक्त अछि। भाषिक आ क्षेत्रीय अस्मिता संग्रहक एक महत्त्वपूर्ण आधार अछि। ‘मैथिली’, ‘अपन मैथिली’, ‘मिथिला’, ‘जनमभूमि’, ‘हमरामे हमर गाम-1’, ‘हमरामे हमर गाम-2’ आ ‘अपन आँगन’ मातृभूमि आ सांस्कृतिक स्मृतिक सशक्त काव्यात्मक रूप प्रस्तुत करैत अछि। लोकजीवन आ प्रकृतिक बिम्ब ‘गाछ छी छतनार’, ‘छतनार गाछ’, ‘गाय’, ‘असमयक बरखा’, ‘बाढ़ि-01’, ‘बाढ़ि-02’, ‘बाढ़ि-03’ आ ‘बाढ़ि-04’ मे प्रभावी ढंगसँ उभरैत अछि।

दार्शनिक चिन्तन आ समय-बोध ‘उमेर’, ‘जिद जुनि करी’, ‘अगम बाट’, ‘राग-01’, ‘राग-02’, ‘राग-विराग’, ‘जिनगी-01’, ‘जिनगी-02’ आ ‘रितैत जिनगी’ मे क्रमशः विकसित होइत अछि। सामाजिक आलोचना आ व्यंग्यात्मक दृष्टि ‘लोके सन लोक’, ‘टिटही टिहैक गेल’, ‘मकर जाल’, ‘छोट-पैघ’ आ ‘कहू हम झूठ कहै छी?’ मे स्पष्ट रूपेँ देखाइत अछि।

शिक्षा, मूल्य आ नैतिक संरचनाक प्रश्न ‘शिक्षाक संसार’, ‘नवका शिक्षा-01’, ‘नवका शिक्षा-02’, ‘पूजाक महत्ता’ आ ‘करी कोन योग’ मे विचारणीय रूपेँ उपस्थित अछि। शिक्षा, मूल्य आ नैतिक संरचनाक प्रश्न ‘शिक्षाक संसार’, ‘नवका शिक्षा-01’, ‘नवका शिक्षा-02’, ‘पूजाक महत्ता’ आ ‘करी कोन योग’ मे विचारणीय रूपेँ उपस्थित अछि-

“किनको नहि पलखति

करत कोना

दिन रातिक पावनि पूजाक विधान

एतीह माय सत्कार कोना करबैन

हुनक पूजा अर्चनक नहि अछि समान।”[v]

एहि पंक्तिमे कवि औपचारिक धार्मिकता आ वास्तविक मातृसम्मानक अंतरकेँ प्रश्नांकित करैत छथि।

सौन्दर्य, ऋतु, आशा आ पुनरारम्भक संकेत ‘सुहासिनी’, ‘गुलमोहर’, ‘नवारम्भ’, ‘सपना’ आ ‘tamसो मा ज्योर्तिगमय’ जेकाँ रचनामे देखाइत अछि।

अन्ततः ‘दरद’, ‘मनक अकास’, ‘चौरचन’, ‘बहिन’ आ ‘कविता’ मानवीय करुणा, आन्तरिक विस्तार आ रचनात्मक आत्मस्वीकारक निष्कर्ष प्रस्तुत करैत अछि।

समग्र रूपेँ ‘राग-विराग’ मानवीय जीवनक अनेक आयामक संतुलित प्रस्तुति अछि। डॉ. शिव कुमार प्रसाद अपन संयमित शैली, लोकभाषिक सहजता आ चिन्तनशील दृष्टिक कारण एहन कवि रूपेँ सामने अबैत छथि जे जीवनक राग आ विराग दुनू अनुभवकेँ समान गंभीरतासँ ग्रहण करैत छथि। एहि संग्रहमे भावुकता नियंत्रित अछि, चिन्तन प्रमुख अछि आ सामाजिक उत्तरदायित्व निरन्तर सक्रिय अछि।

‘पघलैत हिमखंड’ ‘पघलैत हिमखंड’ डॉ. शिव कुमार प्रसाद द्वारा अनूदित एक महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति अछि। ई हिन्दी कवयित्री रजनी छाबड़ा केर काव्य-संग्रह ‘Paighalte Himkhand’ केर संवेदनशील मैथिली रूपान्तर अछि। अनुवादक मूल काव्य-भावना, लय आ अर्थ-संरचनाकेँ सुरक्षित रखैत ओकरा मैथिली पाठक लेल सहज आ आत्मीय रूपमे प्रस्तुत केने छथि। एतय अनुवाद केवल शब्द-परिवर्तन नहि, बल्कि भावपूर्ण पुनर्सृजन रूपेँ सामने अबैत अछि। कवितासभ जीवन, नारी-चेतना, प्रकृति, भाषा-अस्मिता, शिक्षा आ आत्ममंथन जेकाँ विषयसभ समेटैत अछि। हिमखंडक पिघलन भीतर जमा संवेदनाक रूपक बनैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई कृति हिन्दी–मैथिली बीच संवाद-सेतु स्थापित करैत अछि।

ई पोथीक प्रथम संस्करण वर्ष 2018 मे पल्लवी प्रकाशन, तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं० 06, निर्मली, जिला सुपौल (बिहार) सँ प्रकाशित भेल। मूल्य 150 रुपैया निर्धारित अछि। मूल कृति पर कॉपीराइट लेखकक तथा अनुवाद पर अनुवादकक अधिकार सुरक्षित अछि।

'क्षितिज' डॉ. शिव कुमार प्रसादक हिन्दी भाषामे लिखल शोध–आलोचना संग्रह अछि, जाहिमे हिन्दी साहित्यक प्रमुख प्रवृत्तिसभपर गंभीर आ अनुशासित विमर्श प्रस्तुत कएल गेल अछि। पुस्तकमे नागार्जुन, कबीर, प्रेमचन्द, हिन्दी भाषा, दलित साहित्य, स्त्री-विमर्श आ कृषक-जीवन जेकाँ विषयपर केन्द्रित शोधपरक आलेख सम्मिलित अछि। लेखक उद्धरण, संदर्भ-ग्रन्थ आ पाठ-विश्लेषणक माध्यमे अपन तर्क सुव्यवस्थित ढंगसँ स्थापित करैत छथि। नागार्जुनक जनपक्षधरता, प्रेमचन्दक सामाजिक यथार्थ आ कबीरक दार्शनिक दृष्टिक विश्लेषण विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि। 'क्षितिज' शीर्षक प्रतीकात्मक अर्थमे हिन्दी साहित्यक विस्तृत परिदृश्यकेँ समग्र दृष्टिसँ देखबाक प्रयास सूचित करैत अछि। समग्रतः ई कृति हिन्दी साहित्य-चिन्तनक एक महत्त्वपूर्ण, उपयोगी आ शोधोन्मुख दस्तावेज रूपेँ प्रतिष्ठित अछि। ई पोथीक प्रथम संस्करण वर्ष 2013 ईस्वीमे पल्लवी प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल छल।

उपसंहार

डॉ. शिव कुमार प्रसादक व्यक्तित्व आ कृतित्व समकालीन मिथिला, हिन्दी तथा मैथिली साहित्य जगतमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि। ग्रामीण संस्कारसँ विकसित जीवन-दृष्टि, विश्वविद्यालयीय अनुशासनसँ परिष्कृत बौद्धिकता, दीर्घ शिक्षण अनुभवसँ सुदृढ़ शैक्षिक प्रतिबद्धता आ भाषा आन्दोलनसँ अर्जित सामाजिक चेतना ई सभ तत्व हुनकर व्यक्तित्वकेँ समेकित आ विश्वसनीय बनबैत अछि। ओ केवल अध्यापक या लेखक नहि, बल्कि विचार-संपन्न सांस्कृतिक कर्मी छथि।

काव्य-संग्रह सोंहाँत अनसोंहाँत आ राग-विराग मे सामाजिक यथार्थ, लोकसंस्कार, नैतिक द्वन्द्व आ आध्यात्मिक आत्ममंथनक संतुलित अभिव्यक्ति देखाइत अछि। पघलैत हिमखंड जेकाँ अनूदित कृति द्वारा ओ भाषिक सेतु निर्माण करैत छथि। क्षितिज जेकाँ शोध-आलोचना ग्रन्थ हुनकर अकादमिक प्रौढ़ता आ प्रमाण-निष्ठ दृष्टिक परिचायक अछि। एहि प्रकार रचनात्मकता, आलोचनात्मकता आ अनुवाद-संवेदन तीनों धारामे हुनकर सक्रियता स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत अछि।

समग्रतः डॉ. शिव कुमार प्रसाद एहन साहित्यकार छथि, जे भाव आ विवेक, राग आ विराग, लोक आ शास्त्र, परम्परा आ समकालीनता एहि सभ द्वन्द्वात्मक तत्वकेँ संतुलित दृष्टिसँ देखैत छथि। हुनकर लेखन सामाजिक उत्तरदायित्वसँ अनुप्राणित अछि आ हुनकर जीवन-यात्रा साहित्य, शिक्षा आ संस्कृतिक प्रति सतत निष्ठाक प्रमाण अछि। मिथिलाक बौद्धिक परिदृश्यमे हुनकर योगदान एक गंभीर, प्रमाण-आधारित आ कर्मठ साहित्य-साधकक रूपमे दीर्घकाल धरि स्मरणीय रहत। ☒

सन्दर्भ सकेत-

---

[i] 11 **नवंबर**2 2022 **पोस्ट- डॉ. शिव कुमार प्रसाद केर फेशबुक वॉलसँ**

[ii] **सोंहाँत-अनसोंहाँत, कविता संग्रह, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, 2018, पल्लवी प्रकाशन, पृ. 20**

[iii] **सोंहाँत-अनसोंहाँत, कविता संग्रह, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, 2018, पल्लवी प्रकाशन, पृ. 100**

[iv] **राग-विराग, कविता संग्रह, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, 2024, पल्लवी प्रकाशन, पृ. 102**

[v] **राग-विराग, कविता संग्रह, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, 2024, पल्लवी प्रकाशन, पृ. 14**